एक नानाई लोक कथा

मरजेन और उसके दोस्त

चित्र: वी. इग्नाटोव

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

यह तो सभी जानते हैं कि हाथी की सूंड होती है.

बहुत समय पहले और बहुत दूर, बर्फ से ढके साइबेरिया में एक पहाड़ी नदी के किनारे एक साहसी और कुशल नानाई शिकारी रहता था. उसका नाम मरजेन था.

हालाँकि उसके घर में कभी मछली या मांस की कमी नहीं होती थी, फिर भी वो कभी भी अपनी ज़रूरत से ज़्यादा शिकार नहीं करता था.

एक दिन, शिकार उसे शक्तिशाली अमूर नदी तक ले गया. लेकिन कोई भी शिकार न मिलने के कारण वो घने साइबेरियाई जंगल में बहुत गहराई तक चला गया, जहां भयानक बूढ़े बाघ का राज्य था.

जैसे ही वह देवदार और चीड़ के पेड़ों के बीच से गुज़रा, अचानक उसकी नज़र एक हिरण पर पड़ी जो एक दलदल में फँसा हुआ था.

मरजेन उस हिरण पर तीर छोड़ने ही वाला था, तभी वह दयनीय स्वर में चिल्लाया:

"मुझे बख्श दो, मरजेन, इस दलदल से बाहर निकलने में मेरी मदद करो."

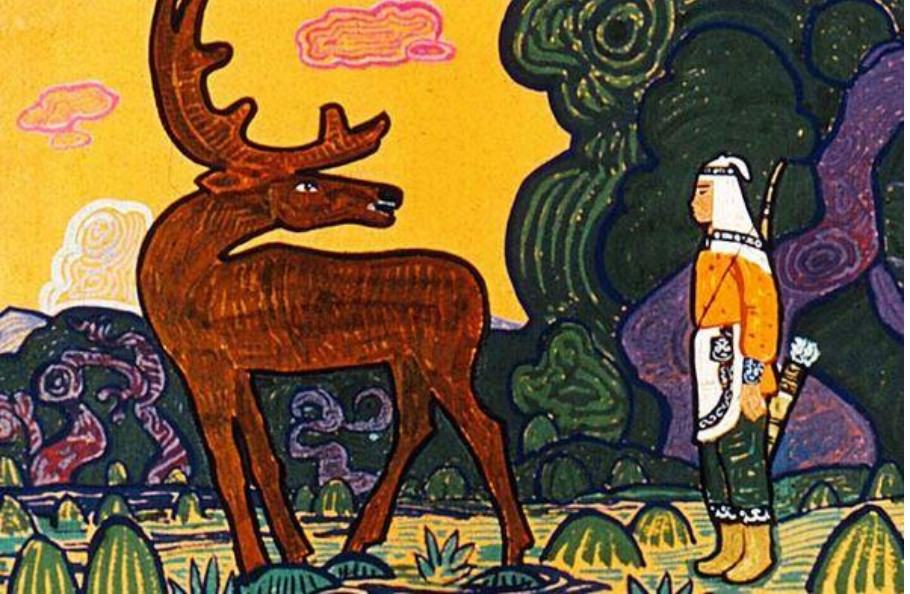

शिकारी को हिरण पर दया आ गई और
उसने उसे दलदल से बाहर खींच लिया.

हिरण ने खुद को कीचड़ से मुक्त करते हुए कहा:

"मरजेन, जब भी तुम्हें मेरी जरूरत हो, तुम मुझे बुला लेना."

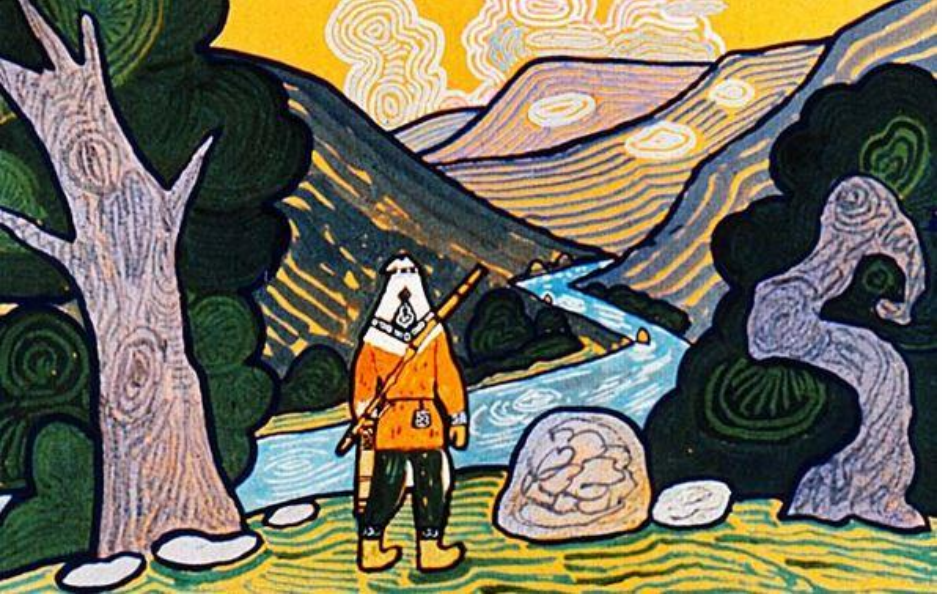

इतना कहकर वह पेड़ों में लुप्त हो गया. मरजेन ने जंगली टैगा के माध्यम से अपने यात्रा जारी रखी.

वो अब अपने आसपास हर चीज़ को एक सतर्क दृष्टि से देख रहा था.

वहां पर उसने गिरती हुई शाखा को, एक चींटी को लगभग कुचलते हुआ देखा. चींटी ने विनती की:

"मरजेन, कृपया मुझे बचाओ."

चींटी के लिए दुःख महसूस करते हुए, मरजेन ने शाखा उठाई और चींटी को आज़ाद कर दिया.

“धन्यवाद, मरजेन, जब भी तुम्हें मेरी जरूरत हो तो मुझे बुलाना.”

मरजेन अमूर नदी के किनारे-किनारे तब तक
चला जब तक वह उथले नीले ताल तक नहीं
पहुंचा. वहां उसने आराम करने की सोची. लेकिन,
जैसे ही वो लेटा उसने एक कर्कश आवाज सुनी:

“मरजेन, मुझे बचाओ. मैं मर रहा हूं.
मैं तीन दिन से यहीं पड़ा हूं.”

ऊपर देखने पर, मरजेन ने उथले पानी में फंसी एक विशाल स्टर्जन मछली को देखा. मरजेन ने अपने कंधे से मछली को नदी की ओर धकेल. जैसे ही मछली ने अपने नीचे गहरा पानी महसूस किया, उसने अपनी पूंछ जोर से घुमाई और उसने अमूर नदी की ठंडी गहराइयों में गोता लगाया.

मरजेन आराम करने के लिए एक चट्टान पर बैठा ही
था कि स्टर्जन ने अपना सिर पानी से बाहर निकाला.

“तुम्हारा हार्दिक धन्यवाद, मरजेन. यदि तुम्हें कभी मेरी
सहायता की आवश्यकता हो तो मुझे जरूर बुलाना.”

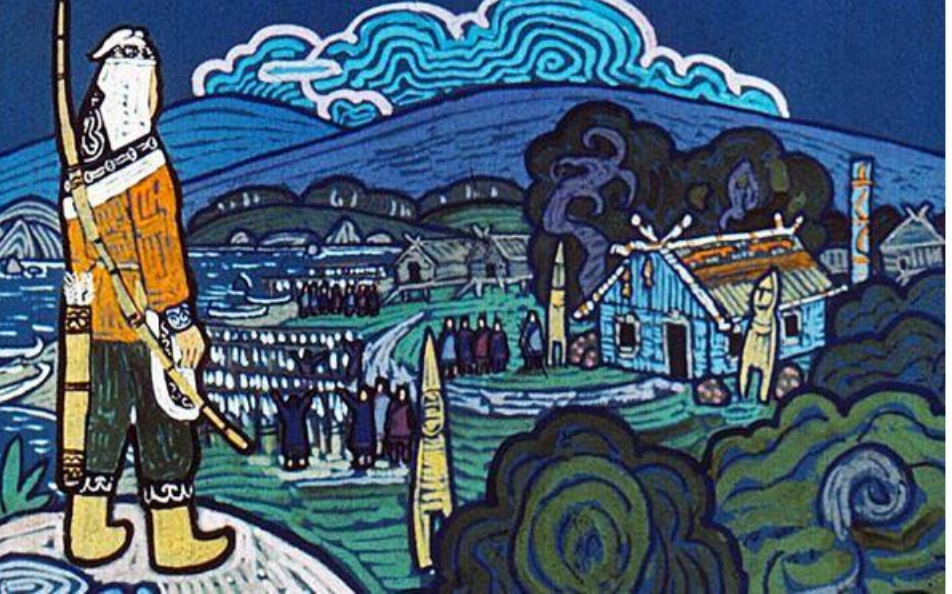

आराम करने के बाद, शिकारी तब तक चलता रहा
जब तक वो एक अपरिचित गाँव में नहीं पहुंचा.

वहां एक बड़ी और भव्य झोपड़ी में से एक मोटा,
चतुर आँखों वाला बूढ़ा व्यक्ति बाहर निकला.

"तुम कौन हो सकते हो?" बूढ़े आदमी ने सौहार्दपूर्ण ढंग से पूछा.

"मैं एक शिकारी हूँ," मरजेन ने उत्तर दिया. "मैं टैगा में शिकार कर रहा था और फिर घूमते-घूमते मैं आपके गांव में आया और फिर मैंने सोचा कि यहाँ क्यों न कुछ देर आराम कर लूं."

"तुम्हारा घर में स्वागत है. तुम मेरे मेहमान बनो," बूढ़े व्यक्ति ने मरजेन को आमंत्रित किया.

मरजेन ने अभी झोपड़ी की भव्यता से अपनी नजरें हटाई ही थीं तभी उसे कांसे की बालियों की झंकार सुनाई दी और दरवाजे पर एक सुंदर युवती दिखाई दी.

युवती का सांवला चेहरा खिल उठा, उसकी आँखें चमक उठीं, उसकी काली चोटी लगभग उसके पैरों तक पहुँच रही थी.

"अच्छा, तुम मेरी बेटी के बारे में क्या सोचते हो?" बूढ़े ने पूछा.

“अमूर के इलाके में कई सुंदरियाँ हैं, लेकिन मैंने इतनी सुन्दर युवती कभी नहीं देखी,'' मरजेन ने कबूल किया. "उसे मेरी पत्नी बनने दो और मैं तुम्हें एक सुंदर उपहार दूंगा."

“उससे काम नहीं चलेगा, मरजेन,” चतुर आँखों वाले बूढ़े व्यक्ति ने कहा. “सौ बहादुर शिकारियों ने उसका हाथ मुझ से माँगा था, परन्तु अब वे सब मेरे दास हैं."

मैं तुम्हें तीन काम करने को दूंगा. यदि तुम उन्हें पूरा कर पाओगे, तो तुम मेरे दामाद बनोगे, यदि नहीं, तो फिर मेरे दास बनोगे. इस पर विचार करो."

"ठीक है!" मर्जेन ने बिना कुछ सोचे-समझे जवाब दिया.

"मेरे वफादार नौकरों, मेरे लोहे के जूते लेकर आओ!" बूढ़ा चिल्लाया.

कुछ ही देर में नौकर भारी जूतों को घसीटते हुए उसके सामने लाया.

“ये लोहे के जूते ले लो. यदि तुमने उन्हें एक ही रात में पहनकर घिस दिया, फिर उसके बाद तुम दूसरे काम के लिए आना,'' बूढ़े ने कहा.

मरजेन ने जूते पहने और फिर वो टैगा में चला गया. “इन जूतों को घिसने के लिए मुझे सौ वर्ष जिंदा रहना पड़ेगा,'' उसने दुःखी भाव से विचार किया. फिर, अचानक उसे हिरण की याद आई.

"हिरण, मेरे दोस्त, मेरी सहायता के लिए आओ!" मरजेन चिल्लाया.

इससे पहले कि उसकी आवाज़ की प्रतिध्वनि शांत होती, शिकारी के सामने हिरण खड़ा था.

मरजेन ने उसे अपनी बदकिस्मती के बारे में बताया.

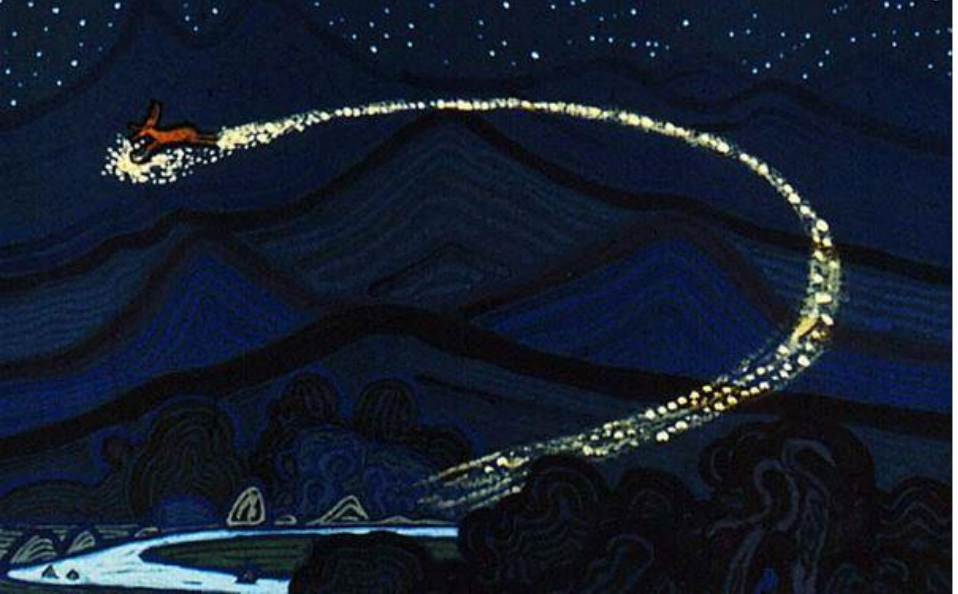

बिना कुछ कहे हिरण ने अपने अगले पैरों पर जूते पहने
और फिर रात के चमकीले सितारों की तरह चिंगारियों के
निशान छोड़ते हुए वो पहाड़ियों में भाग गया.

इस बीच मरजेन घास पर लेट गया और सो गया. जब वह भोर में उठा तो हिरण पहले से ही वहाँ पर मौजूद था: लोहे के जूते अब घिसे हुए और ऊपर से फ़टे हुए दिख रहे थे.

मरजेन बहुत खुश हुआ. उसने अपने दोस्त हिरण
की गर्म नाक को चूमा. फिर घिसे-फटे जूतों को
पकड़कर वो तेजी से गाँव की ओर चला.

मरजेन ने बूढ़े की झोपड़ी के पास पहुंचकर दीवार को जोर-जोर से
तब तक थपथपाया जब तक कि बूढ़ा आदमी दौड़कर बाहर नहीं आया.

जूतों के अवशेष बूढ़े के पैरों पर फेंकते हुए मरजेन चिल्लाया:

"अब मुझे दूसरा काम दो!"

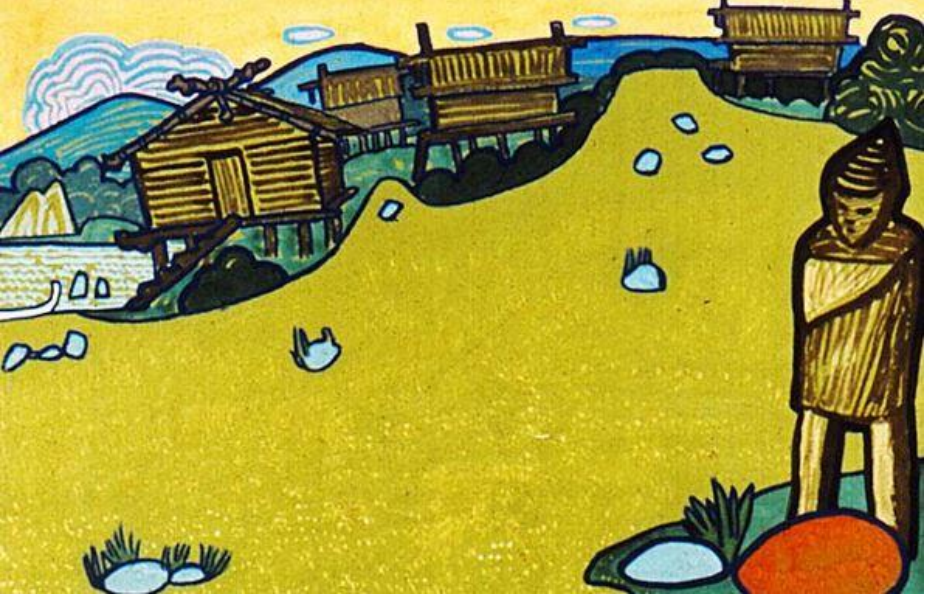

एक क्षण के लिए बूढ़ा व्यक्ति निःशब्द रह गया. फिर होश में आने के बाद वह आश्चर्यचकित होकर चिल्लाया:

“नौकरों, मेरे लिए पाँच बोरी बाजरा लेकर आओ!”

बूढ़े आदमी ने बाजरे को जमीन पर ऐसे पटका जिससे अनाज दूर-दूर तक पूरे गांव में फैल गया.

फिर वह हँसा:

“अब सारा बाजरा बोरों मे वापिस इकट्ठा करो लेकिन एक भी दाना न छूटे. उसके लिए तुम्हारे पास बस एक दिन का समय है."

मरजेन घास के मैदान में गया. वो जमीन पर लेट गया और उसने चींटी को पुकारा:

"चींटी, मेरी दोस्त, मेरी सहायता के लिए आओ!"

तुरंत चींटी प्रकट हुई और उसने शिकारी की कहानी सुनी. फिर उसने अपने तमाम भाई-बहनों को बुलाया. उससे जल्द ही पूरी ज़मीन चींटियों से भर गई - इतनी अधिक चींटियां थीं कि उन्होंने गांव के हर कोने को ढक लिया.

इससे पहले कि मरजेन अपने पाइप
की तम्बाकू को पी पाता, बाजरे का हर
दाना बोरों में वापस भर गया था.

मरजेन ने चींटियों को धन्यवाद दिया और फिर वो बूढ़े आदमी के पास गया, जो इस बार और भी ज्यादा आश्चर्यचकित हुआ.

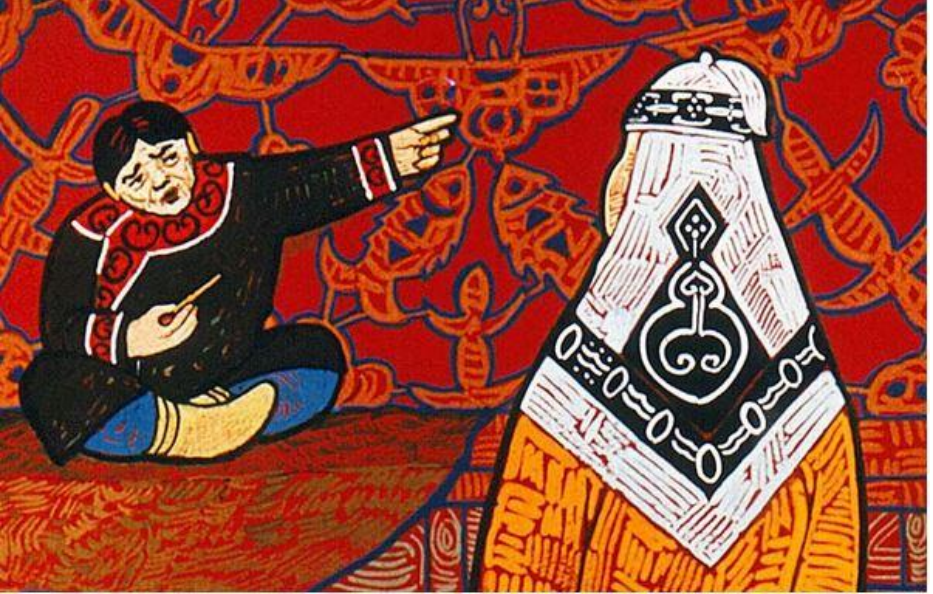

बूढ़े ने अपना सिर खुजलाते हुए कहा:

“मैं तुम्हें एक अंतिम कार्य दूंगा. यदि तुम उसमें भी सफल हुए तो फिर मेरी बेटी तुम्हारी हो जाएगी. अनेकों वर्ष पहले, जब मेरे पिता छोटे थे, तब उन्होंने अमूर नदी में एक सोने की अंगूठी गिरा दी थी. उस अंगूठी को ढूंढ कर लाने के लिए तुम्हारे पास आज शाम तक का समय है.”

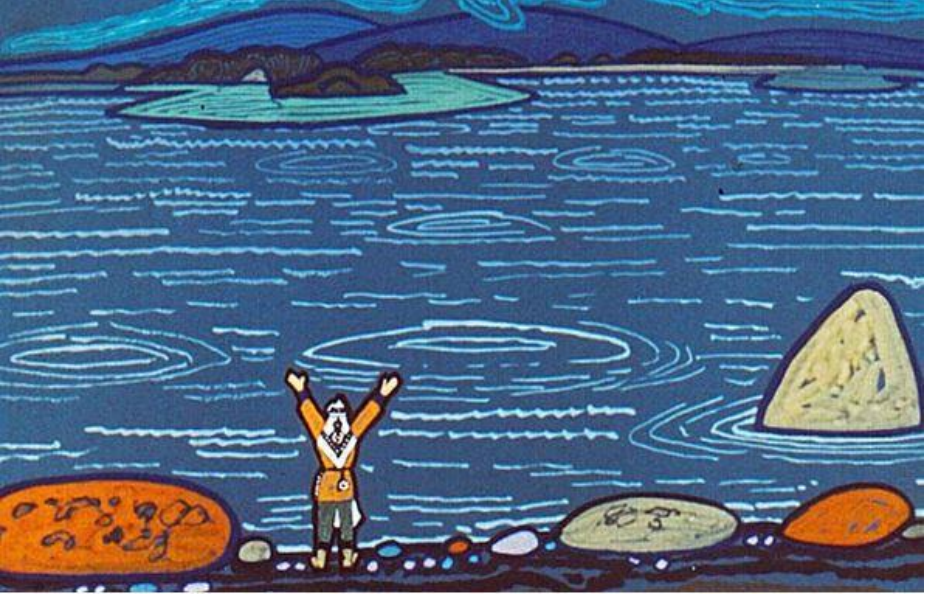

झोंपड़ी से बाहर निकलने के बाद एक बार तो मरजेन निराश हो गया. लेकिन खिड़की से युवती ने उसकी ओर अपना सफ़ेद रुमाल लहराया. उससे मरजेन को कुछ तसल्ली मिली और फिर वह तेजी से नदी के किनारे की ओर गया.

“स्टर्जन, सभी मछलियों की रानी, तुरंत मेरी सहायता के लिए आओ!”

मरजेन ने तीन बार बुलाया और फिर अमूर नदी की
गहराई से स्टर्जन का विशाल सिर पानी से ऊपर
उभरा. मरजेन ने उसे अपना सारा दुःख बताया.

बिना कुछ बोले स्टर्जन ने नदी के तल में गोता
लगाया और वहां उसने अमूर नदी की गहराई
में रहने वाले हरेक निवासी को बुलाया.

बड़ी और छोटी मछलियाँ नदी में तब तक इधर-उधर
दौड़ती रहीं जब तक कि उन्हें अंगूठी मिल नहीं गई.

प्रसन्न शिकारी ने सोने की अंगूठी बूढ़े आदमी को दी. बूढ़े ने अंगूठी ली और फिर अपनी झोपड़ी में गायब हो गया. कुछ देर बाद जब वह बाहर आया, उसकी मुस्कुराती हुई बेटी उसके साथ थी.

“तुम एक बहादुर और साहसी शिकारी हो. अब तुम मेरी बेटी को अपनी पत्नी बना सकते हो. यदि चाहो तो मुझे, मेरे दासों, मेरे सेवकों और मेरा पूरा राज्य भी ले सकते हो. अब यह सब कुछ तुम्हारा है."

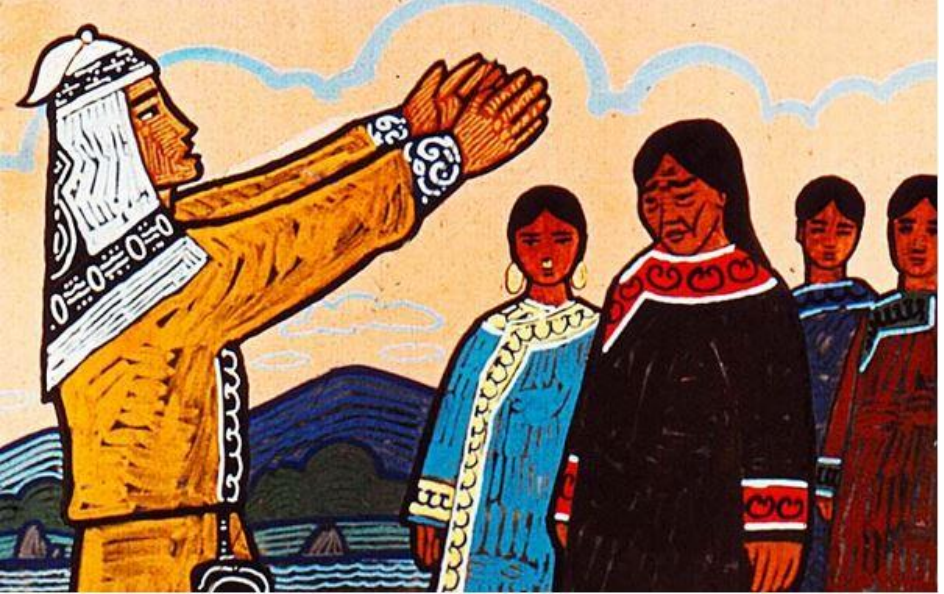

मरजेन ने तब उत्तर दिया:

"मैं आपको धन्यवाद देता हूं. लेकिन आज के बाद से कोई दास या नौकर नहीं रहेगा. हम सभी भाई-भाई बनकर शांति से रहेंगे."

उस समय से वे सभी खुश और संतुष्ट रहने लगे.
और फिर अमूर नदी के तट पर नानाई गाँव के
शिकारी के सौभाग्य ने कभी उसका साथ नहीं छोड़ा.